

Hardatt Lal Sharma

Hardatt Sharma

[illegible]

[illegible]

म्युनिसिपलबोर्ड मुरादाबाद और भरतपुर राज्य

* संशोधित *

बाल-धर्मशिक्षा

पहला भाग



लेखक—

विद्याभूषण पं० लालमणि जी पूठिया

मुरादाबाद

प्रकाशक—

पं० महावीर प्रसाद मैनेजर फर्म

पं० मुरारीलाल बुकसेलर मुरादाबाद

ऐम० पी० मिश्रा पेट दी श्रीअवधेश प्रिन्टिङ्ग वर्क्स

मुरादाबाद

प्रथम संस्करण } सन् १९३६ { मूल्य =)

तथा अलवर स्टेट के स्कूलों के लिये स्वीकृत



बाल धर्मशिक्षा ।

—:o:—

ईश्वर प्रार्थना

—o[:]o—

जय जगदीश हरे, प्रभो ! जय जगदीश हरे ।
अखिल लोक के स्वामी, अति आनन्द भरे । जय०
दानी दीनानाथ दयानिधि, दीन बन्धु दाता । प्रभो०
हम सब तुम्हारे, तुम हो पिता माता । जय०
अशरणशरण अमर अविनाशी, अज अन्तर्यामी प्रभो०
हम सब दास तुम्हारे, तुम सब के स्वामी । जय०

ईश्वर और सृष्टि

शिष्य–पंडितजी ! संसार में इतने मनुष्य कहां से आये ? धरती और आकाश को किसने बनाया ? पेड़ों में फल किसने लगाये ? फूलों में लाली कहां से आयी ? चमेली और गुलाब में सुगन्ध किसने डाली ? आग में जलाने की ताक़त कहां से आयी ? हवा को कौन चलाता है ? और पानी में ठंढापन कहां से आया ?

उत्तर–यह ईश्वर की लीला है सूर्य, चन्द्रमा आकाश, पाताल, हवा, पानी, मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े मकोड़े, चमेली, गुलाब, फल, फूल, सुगन्ध नीला, पीला, लाल और हरा रंग जो कुछ हम देख रहे हैं इन सब में ईश्वर की ताक़त काम कर रही है।

प्रश्न–ईश्वर किसे कहते हैं ?

उत्तर–जो सुख दुख से रहित, और संसार का पालन–पोषण व नाश करता है उसको ईश्वर कहते हैं। ईश्वर सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक अजर अमर अविनाशी है और वह सब जीवों को पाप पुण्य के फल ठीक २ देता है।

प्रश्न–ईश्वर कहाँ रहता है ?
उत्तर–ईश्वर के रहनेका कोई स्थान निश्चित नहीं है वह सब जगह व्यापक है जैसे दूध में मिठास पानी में नमक और फूल में सुगन्ध मिली होती है इसी प्रकार ईश्वर भी संसार के कण २ में व्यापक है।

प्रश्न–ईश्वर हमें दीखता क्यों नहीं ?
उत्तर–ईश्वर ज्ञान व योगाभ्यास के द्वारा दीखता है जब मनुष्य श्रद्धा और भक्ति के साथ उसकी उपासना करते हैं तब उन्हें दिखाई देता है।

प्रश्न–क्या ईश्वर के हाथ पाँव आदि भी हैं।
उत्तर–हाँ! ईश्वर के सब अँग हैं यदि उसके अंग न होते तो बिना अंग वाले ईश्वर से ये अंग वाले मनुष्य पशु पक्षी आदि कैसे उत्पन्न होते ?

प्रश्न—जब संसार को ईश्वर ने बनाया तो ईश्वर को किसने बनाया ?
उत्तर-ईश्वर को किसीने नहीं बनाया वह "स्वयंभू" है जो अपने आप उत्पन्न हो उसको स्वयंभू कहते हैं

प्रश्न—बरसात में बहुत से कीड़े-मकोड़े आपही उत्पन्न होजाते हैं तो क्या वे भी स्वयंभू हुये।

उत्तर--नहीं कीड़े मकोड़े दो चीज़ों के योग से पैदा होते हैं इसलिये उन्हें स्वयंभू नहीं कह सकते परन्तु ईश्वर बिना किसी संयोग (मेल) के उत्पन्न होता है इसलिये उसे स्वयंभू कहते हैं।

प्रश्न--जीव किसको कहते हैं ?

उत्तर--ईश्वर के अंशको जीव कहते हैं जैसे आग में से चिंगारियां और पानी में से कण पैदा होते हैं इसी प्रकार उस विराट् पुरुष के शरीर से जीव उत्पन्न होते हैं और ये अनादि हैं।

प्रश्न--ईश्वर और जीव में भेद क्या है ?

उत्तर--जीव अल्पज्ञ (थोड़े ज्ञान वाला) है और ईश्वर सर्वज्ञ (सम्पूर्ण ज्ञान का भंडार) है केवल इतना ही उसमें भेद है।

प्रश्न--प्रकृति किसे कहते हैं।

उत्तर--जिस पदार्थ (मैटर) से संसार बनता है उसे प्रकृति कहते हैं जैसे पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँच तत्त्व कहाते हैं और इन्हीं से सृष्टि की रचना होती है।

प्रश्न- सृष्टि किसको कहते हैं।

उत्तर--सृष्टि माने दुनिया के हैं।

प्रश्न--सृष्टि अनादि है या सादि है।

उत्तर--सृष्टि का आदि और अन्त नहीं है इसलिये इसको अनादि कहते हैं, ईश्वर इसको बनाता बिगाड़ता रहता है जैसे सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र अब मौजूद हैं वैसे ही अनन्त ग्रह उपग्रह अनेक बार हो चुके हैं और बराबर उत्पन्न होते रहेंगे।

प्रश्न--क्या ईश्वर निर्दयी है जो जीवों को उत्पन्न कर उन्हें दुख देता और मारता ?

उत्तर--नहीं, ईश्वर बड़ा दयालु है जो उसकी शरण में जाता है वह उसके सब पापों को नष्ट कर देता है सुख दुःख मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगते हैं इसमें ईश्वर का दोष नहीं है। जैसा कर्म करोगे वैसा फल पाओगे यह कहावत प्रसिद्ध है। किन्तु उन कर्मों का फल ईश्वर देता है।

प्रश्न--कर्म कितने होते हैं ?

उत्तर—कर्म तीन प्रकार के होते हैं ? १—प्रारब्ध २-संचित ३ क्रियमाण। १—पहले जन्म के जिन कर्मों के द्वारा प्रारब्ध बनता है उनको प्रारब्ध कर्म कहते हैं २ जो अच्छे कर्म इकट्ठे करके हमने रख लिये हैं जिनका फल हमें अपनी इच्छा के अनुसार मिलता है उनको संचित कर्म कहते हैं। ३—जिन कर्मों को हम अब कर रहे हैं और जिनके द्वारा

आगे के लिये हमारे शरीरका साँचा तय्यार होता है उनको क्रियमाण कर्म कहते हैं।

प्रश्न—क्या हम अपने प्रारब्ध को बना और बिगाड़ भी सकते हैं ?

उत्तर—हाँ, यदि तुम अच्छे कर्म करोगे तो प्रारब्ध अच्छा बनेगा और बुरे कर्म करोगे तो प्रारब्ध बुरा बनेगा।

प्रश्न—जिस परमात्मा का पहले वर्णन आपने किया है, वह साकार है या निराकार।

उत्तर—परमात्मा दोनों प्रकार का है जब वह सृष्टि रचता है तब वह साकार (रूप वाला) होता है और जब वह सृष्टि का नाश करता है तब वह निराकार (रूपरहित) होता है, गुसांई तुलसीदास जी लिखते है।

एक दारुगत देखिये एक। पावक युग सम ब्रह्म विवेक।

जैसे अग्नि के दो रूप हैं साकार और निराकार जैसे काठ में अग्नि निराकार रूपसे व्यापक रहती है किन्तु चूल्हे और भट्टी में वह साकार रूप से दीखता है, ठीक इसी प्रकार इश्वर के साकार और निराकार ये दो रूप हैं।

प्रश्न—रामायण में तो ईश्वर के साकार रूप की गंध तक भी नहीं, उसमें तो लिखा है कि—

बिन पग चले सुने बिन काना। कर बिन कर्म करे विधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिन वाणी वक्ता बड़ योगी॥
तन बिन स्पर्श नयन बिन देखा। ग्रहे घ्राण बिन वास अशेषा॥
अस सब भांति अलौकिक करणी। महिमा जासु जाय नहीं वरणी

इन चौपाइयों से तो साफ जाहिर होता है कि ईश्वर निराकार है।

उत्तर—ये चौपाइयां ईश्वर को निराकार बताती हैं सो ठीक है किन्तु इनके आगे साफ़ लिखा है कि—

जेहि इमि गावहीं वेद बुध, जाहि धरैं मुनि ध्यान।
सोई दशरथ सुत भक्त हित, कौशल पति भगवान्॥

इससे ईश्वर साकार सिद्ध हो रहा है वेद और शास्त्रों में ईश्वर के दोनों ही रूप लिखे हैं इसमें तनिक भी सन्देह न करना चाहिये।

—o—

धर्म

—o—

प्रश्न—धर्म किसे कहते हैं।

उत्तर—जिस से इस लोक में उन्नति और अन्त में मुक्ति प्राप्त हो उसे धर्म कहते हैं वह धर्म दो प्रकार का है एक साधारण धर्म और दूसरा विशेष धर्म।

प्रश्न—साधारण धर्म किसे कहते हैं।

उत्तर—धैर्य दूसरे की की हुई बुराइ को सह लेना मन को रोकना रोकना चोरी न करना, बाहर भीतर से शुद्ध होना इन्द्रियों को वश में रखना शास्त्रों का ज्ञान आत्मा का ज्ञान सत्य बोलना और क्रोध न करना ये १० साधारण धर्म के लक्षण हैं।

प्रश्न—विशेष धर्म किसे कहते हैं।

उत्तर—जैसे स्त्री पुरुषों में गृहस्थ और संन्यासियों में कुछ विशेषता होती है उसको विशेष धर्म कहते है। अर्थात् जिस काम को गृहस्थी कर सकता हैं उसको सन्यासी नहीं कर सकता। और जिस काम को सन्यासी कर सकता है उसको गृहस्थी नहीं कर सकता उन दोनों के कार्यों में कुछ न कुछ विशेषता होगी। गृहस्थाधर्म का पालन स्त्री के विना नहीं सकता इसलिये गृहस्थ में स्त्री का होना आवश्यक है किन्तु संयासी स्त्री को नहीं रख सकता और न संयासी को चोटी व जनेऊ रखना ही योग्य है। किन्तु गृहस्थ में इसके विना काम नहीं चल सकता।

प्रश्न—धर्म का पालन करने से क्या लाभ है।

उत्तर—धर्म का पालन करने से बहुत से लाभ होते

हैं। देखो सृष्टि के आरम्भ में न कोई राज्य था और न कोई राजा था, न क़ानून था और न कोई माजिस्ट्रेट था। उस समय प्रजा अपनी रक्षा धर्म से करती थी। जब एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ कोई व्यवहार करता था तो वह यह विचार लेता था कि मेरा व्यवहार धार्मिक है या नहीं। यदि वह व्यवहार धर्मानुकूल होता था तो वह करता था वरना नहीं। बहुत दिनों तक भारतवर्ष में ऐसा शासन होता रहा किन्तु जब प्रजा में स्वार्थ आया तब राजा नियत हुआ, वह प्रजा की रक्षा धर्म के अनुसार करने लगा इससे मालूम होता है कि जो शासन हज़ारों कानून और लाखों जेलखानों से नहीं होसकता वह शासन केवल एक धर्म द्वारा होसकता है। धर्म के अवलम्बन से तुम अदालतें उठा सकते हो, पुलिस को विदा कर सकते हो प्रत्येक प्राणी को वशमें कर सकते हो और प्रेमकी गंगा बहा सकते हो।

आज बड़े २ राज्यों में जितनी खराबियां आगई हैं इन सब का कारण है धर्म का त्याग।

एक राजा स्वार्थ में पड़कर दूसरे राजा पर चढ़ बैठता है वह प्रजा का धन बड़े बड़े कर लगा कर खींचता हैं। धर्मकी दृष्टि से ऐसा करने वाले के लिये

घोर पाप है। क्या यह धर्म शासन का मुकाबला कर सकता है? कभी नहीं, इतिहासों के देखने से पता लगता है कि जब से धर्म विदा हुआ तभी से लूट खसोट स्वार्थ और व्यभिचार (जिनाकारी) ने अपना अड्डा यहां आकर जमाया। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को धर्म से प्रेम करना चाहिये।

ब्राह्मणादि वर्णों के कर्म

---o---

प्रश्न—वर्ण कितने हैं? और उनके नाम क्या क्या हैं?

उत्तर--वर्ण चार हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र।

प्रश्न—ब्राह्मण के कर्म कौन कौन से हैं?

उत्तर--वेद का पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना कराना दान देना और लेना ये कर्म ब्राह्मण के हैं इन से ब्राह्मण की उन्नति होती है।

प्रश्न--क्षत्रिय के कर्म क्या २ हैं?

उत्तर--प्रजा की रक्षा करना दान देना, यज्ञ करना वेदका पढ़ना और विषयों में लिप्त न होना ये कर्म क्षत्रिय के हैं।

प्रश्न—वैश्य के कर्म क्या हैं?

उत्तर—पशुओं की रक्षा करना, यज्ञ करना, वेद पढ़ना, व्यापार, करना सूद लेना और खेती करना यह कर्म वैश्य के हैं।

प्रश्न—शूद्र के कर्म क्या २ हैं ?

उत्तर—ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यों की सेवा करना यह एक कर्म शूद्र का है।

धर्म की पुस्तकें।

प्रश्न—हिन्दू व आर्यधर्म की पुस्तकें कौन २ सी हैं

उत्तर—चार वेद छः वेदाङ्ग छः दर्शन, अठारह पुराण और अठारहा स्मृतियां हैं।

प्रश्न--वेदों के नाम क्या २ हैं और इनमें क्या २ लिखा है ?

उत्तर—ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद ये वेदों के नाम हैं इनमें ईश्वर का ज्ञान है।

प्रश्न--वेद शब्दका अर्थ क्या है ?

उत्तर-ईश्वरीय ज्ञान अर्थात् ईश्वर के ज्ञानका भंडार है।

प्रश्न--ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर-ज्ञानका अर्थ जानना है जो जैसा हो उस को पूरी तौर से जान लेना ज्ञान कहलाता है जैसे

सोने को सोना, चांदी को चांदी, हीरे को हीरा, सांपको सांप, रस्सी को रस्सी, सीपी को सीपी, कांचको कांच मणिको मणि और लालको लाल।

प्रश्न--ज्ञानसे क्या लाभ होता है ?

उत्तर—ज्ञान से मुक्ति मिलती है।

प्रश्न—मुक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर—मरने और जीने के दुःख से छूट जाना मुक्ति कहलाती है।

प्रश्न—वेदों का ज्ञान सब से पहिले किनको हुआ ?

उत्तर—अग्नि वायु और सूर्य देवता को इन्हीं के द्वारा ये प्रगट हुए। अर्थात् अग्नि से ऋग्वेद वायु से यजुर्वेद और सूर्य से सामवेद और अथर्वेद का ज्ञान अथर्वा ऋषि को हुआ।

प्रश्न—वेदों में क्या २ लिखा है ?

उत्तर—वेदों में ज्ञान विज्ञान और परमात्मा की उपासना का विधान है।

प्रश्न—वेद किस लिये प्रगट हुए ?

उत्तर—मनुष्यों के कल्याण के लिये। इनके द्वारा मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त होता है।

वेदाङ्ग और दर्शन ग्रन्थ

—०—

प्रश्न—वेदाङ्ग कौन कौन से हैं ?

उत्तर—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष।

प्रश्न—शिक्षा किसे कहते हैं ?

उत्तर—वेद के पढ़ने की शैली जिस पुस्तक में हो उसे शिक्षा शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न—कल्प किसे कहते हैं ?

उत्तर—मंत्र सम्बन्धी क्रियासिद्धाँशका जिस में वर्णन हो उसे कल्प शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न—व्याकरण किसे कहते हैं।

उत्तर—जिसके द्वारा शब्दों का अर्थ शुद्ध लिखा और पढ़ा जाय उसे व्याकरण कहते हैं।

प्रश्न—निरुक्त किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिस के द्वारा वेदका भावार्थ समझने में सहायता मिले उसको निरुक्त कहते हैं।

प्रश्न—छन्द किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिस के द्वारा वेद मन्त्रों की ध्वनियों का ज्ञान हो उसे छन्द शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न—ज्योतिष किसे कहते हैं।

उत्तर-जिसके द्वारा ग्रह नक्षत्र और काल (समय) का विचार किया जाय उसे ज्योतिष शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न--दर्शन ग्रन्थ किसे कहते हैं ?

उत्तर--जिस शास्त्र के द्वारा सांसारिक दुःखों का नाश और ईश्वर की प्राप्ति हो उसको दर्शन शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न--दर्शन ग्रन्थ कितने हैं ? और उन के नाम क्या क्या हैं।

उत्तर--दर्शनग्रन्थ ६ हैं उनके नाम ये हैं १न्याय-दर्शन २ वैशेषिकदर्शन ३ योगदर्शन, ४ सांख्यदर्शन ५ ब्रह्मदर्शन, और ६ कर्म मीमांसादर्शन।

पुराण और स्मृतिशास्त्र

——:o:——

प्रश्न--पुराण किसको कहते हैं।

उत्तर--सृष्टि की उत्पत्ति सृष्टि का नाश वंशावलि मन्वन्तर वर्णन और अच्छे मनुष्यों के चरित्र जिस पुस्तक में हों उसे पुराण कहते हैं।

प्रश्न-१८ पुराण कौन कौन से हैं ?

उत्तर--सुनो १८ पुराणों के नाम ये हैं ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण, शिवपुराण, भागवत, नारद पुराण, मार्कण्डेयपुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण

लिङ्गपुराण, बाराहपुराण, स्कन्दपुराण, वामनपुराण, कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, गरुड़पुराण, ब्रह्माण्डपुराण और ब्रह्मवैवर्त्त पुराण।

प्रश्न—स्मृति किसे कहते हैं?

उत्तर—वेद मंत्रोंका आश्रय लेकर जिनमें वर्णधर्म आश्रमधर्म, राजधर्म और प्रजाधर्म का वर्णन हो उसको स्मृति शास्त्र कहते हैं।

प्रश्न—स्मृतियें कितनी हैं?

उत्तर—स्मृतियें अठारह हैं।

प्रश्न—१८ स्मृतियें कौन कौनसी हैं।

उत्तर—स्मृतियों के नाम इस प्रकार हैं मनुस्मृति अत्रिस्मृति, विष्णुस्मृति, हारीतस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, औशनस्मृति, अङ्गिरास्मृति, यमस्मृति, आपतम्बस्मृति, संवर्तस्मृति, कात्यायनस्मृति, वसिष्ठस्मृति, पराशरस्मृति, संखस्मृति, देवलस्मृति शातातपस्मृति, जाबालिस्मृति, नारदस्मृति।

हमारी जन्मभूमि।

प्रश्न—तुम्हारी जन्मभूमि कौनसी है।

उत्तर—भारतवर्ष अथवा हिन्दुस्तान।

प्रश्न—तुम्हारा पालन पोषण किससे हुआ है?

उत्तर—भारवतर्ष की उत्पन्न हुई वस्तुओं से।

प्रश्न—तुमने किसका दूध पिया है?

उत्तर—भारतकी देवी गौ माता को ।

प्रश्न—तुमने किसका अन्न खाया है ।

उत्तर—भारतमाता का ।

प्रश्न—तुम—भारतमाताकी सेवा करोगे या नहीं ।

उत्तर—अवश्य करेंगे ।

प्रश्न—तुम भारत माताका उद्धार करोगे या नहीं

उत्तर-जरूर करेंगे ।

प्रश्न—तुम भारत माता का उद्धार कैसे करोगे ?

उत्तर—अपने देशकी वस्तुओं को व्यवहार में लाकर दुखियों की सेवा करके आपस में संघशक्ति पैदा करके और दुश्मनों को नष्ट करके तथा अपने प्राणों को न्यौछावर करके भारतमाता का उद्धार करेंगे ।

प्रश्न-तुम्हारा धर्म क्या है ।

उत्तर-वैदिक सनातनधर्म ।

प्रश्न-तुम्हारी जाति क्या है ।

उत्तर-हिन्दू आर्यजाति ।

प्रश्न-हिन्दु व आर्य किसको कहते हैं ।

उत्तर-जो तप के द्वारा अपने पापों का नाश कर दे और दुराचारियों को दण्ड दे उसे हिन्दू कहते हैं । जो श्रेष्ठ स्वभाव परोपकारी सदाचारी और ईश्वर के आस्तित्व को माने उसको आर्य कहते हैं ।

प्रश्न-हम कौनसा गीत गाया करें ।

उत्तर-सुनो तुम इस गीत को रोज गाया करो ।

गीत ।

हे भगवान् दो वरदान ।
काम देश के आऊं मैं ॥
वीर बनूं मैं धीर बनूं मैं ।
उसका यश फैलाऊं मैं ॥
दयानिधान ! बन विद्वान् ।
सबका ज्ञान बढ़ाऊं मैं ॥
बनूं उदार हे करतार ।
दोनों को अपनाऊं मैं ॥

गिरीश

भारत मातृ वंदना ।

भारतमाता ! मेरी माता ! तुझे क्या हुआ मेरी माता ।
आँखोंके न सूखते आंसू तेरे बिन है रहा न जाता ॥
मैं हूँ बाल खिलौना तेरा—छोटासा मृगछौना तेरा ।
तू कितनी प्यारी लगती है—कैसे गुण मैं गाऊँ तेरा ॥
सेवा तेरी कर न सका मैं, पीड़ा तेरी हर न सका मैं ।
कैसे तुझको पा सकता हूं? जब तेरे हित मर न सका मैं॥
तूही मेरी मातृमही है जिस में मैंने शान्ति लही है ।
सेवा में तेरी मर जाऊँ—इच्छा मेरी एक यही है ॥

श्रीनाथसिंह ।

हमारा भारतवर्ष ।

भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है ॥
जिसका मुकुट किरीट हिमाचल,
है यज्ञोपवीत गंगाजल,
फलकर इसने विविध फूल फल,
सुरभि सुयश विस्तारा है ।
भारतवर्ष हमारा प्यार, भारतवर्ष हमारा है ॥
इसके हित साधन में डट कर,
तीसकोटि सुत रहते तत्पर,
कहते हैं जो गरज गरज कर,
भारतवर्ष हमारा है,
भारतवर्ष हमारा प्यारा, भारतवर्ष हमारा है ॥

सुन्दर भारत ।

भारत हमारा कैसा, सुन्दर सुहारहा है ।
शुचिभाल पै हिमाचल, चरणों में सिंधु अंचल,
उर पर विशाल सरिता, सित हीर हार चंचल,
मणिबद्ध नील नभ का, विस्तीर्ण पट अचंचल,
सारा सुदृश्य वैभव, मनको लुभा रहा है ॥ १ ॥
उपवन सघन बनाली, सुषमा सदन सुखाली,
प्रावृट् के सान्द्र घनकी, शोभा निपट निराली,
कमनीय दर्शनीय, कृषिकर्म की प्रणाली,

सुरलोक की छटा को पृथ्वी पै ला रहा है ॥ २ ॥
सुरलोक है यहीं पर, सुख शोक है यहीं पर,
स्वभाविकी सुजनता, गत शोक है यहीं पर,
शुचिता स्वधर्म जीवन, बे रोक हैं यहीं पर,
भवमोक्ष का यहीं पर अनुभव भी आरहा है ॥३॥
हे वन्दीनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत
हे न्यायबंधु निर्भय, निर्बन्धनीय भारत,
मम प्रेम पाणि बल्लव, अवलम्बनीय भारत,
मेरा ममत्व सारा, तुझे में समा रहा है ॥ ४ ॥
श्रीधर पाठक ।

स्वदेश प्रेम ।

हमको प्यारा अपना देश, अपनी भाषा अपना वेश।
अपनी बातें अपना ढंग, अपनी चीजें अपना रंग ॥
औरों से क्या हमसे काम, लेंगे नित भारत का नाम,
सबसे अनुपम देश हमारा, क्यों न हमें होगा फिर प्यारा॥
तज देंगे हम अपना सारा पर न तजेंगे भारत प्यारा ।
बाधायें आयेंगी नाना, दुख भी सहने होंगे नाना ॥
पर इसकी परवाह नहीं है, जीवन की कुछ चाह नहीं है।
बड़ी खुशी से दुःख सहेंगे, जय जय भारत सदा कहेंगे ॥

ईश वंदना ।

हमें प्रभु ऐसा दो वर दान ।
नित आकरें आपके दर्शन मंदिर में भगवान् ।

नस नसमें हो भक्ति आपकी सदा करें गुणगान ॥१॥
हमें प्रभु ऐसा दो वरदान।
स्वधर्म रक्षक बनें देशमें पढ़ पढ़ वेद पुरान।
आर्यवंश की रक्षा करना, सीखे हिन्दुस्तान ॥ २ ॥
प्रभु हमें ऐसा दो वरदान।
सुखस्वतंत्रता स्वत्व मानवी, मिले बनें बलवान्।
जहां जायें सन्मान पायें हम सकल आर्य सन्तान ॥३॥
हमें प्रभु ऐसा दो वरदान।
प्रगट करो निज शक्ति दुर्गा करमें लिये कृपान।
दुष्टों की क्षय भक्तोंकी जय, कर आनन्द महान ॥४॥
प्रभु हमें ऐसा दो वरदान।

प्रभु वंदना।

हे प्रभु आनन्द दाता, ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिये ॥
लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक, वीर व्रतधारी बनें ॥
हे! दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये।
दूर करके हर बुराई को भलाई ? दीजिये ॥
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पे हो परमात्मा।
होवें बालक इस नगर के सब के सब धरमात्मा ॥
हो उजाला सबके मनमें ज्ञानके प्रकाश से।
और अंधेरा दूर सारा हो अविद्यानाश से ॥
खोट कर्मों से बचें तेरा ही गुण गावें सभी।

सारी विद्याओं को सीखें, ज्ञान से भरपूर हों ॥
शुभ कर्म में होवें निरत, दुष्ट गण सब दूर हों ।
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश ॥
वायु जल सुखदाई होवें जावें मिट सारे क्लेश ।
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी ॥
होवे आपस में प्रीति हो और बनें परमार्थी ।
लोभी और कामी क्रोधी कोई भी हम में न हो ॥
सारे व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ।
अच्छी संगत में रहें और वेद मारग पर चलें ॥
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें ।
कीजिये केवल का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से ॥
ज्ञान भक्तों में बढ़ाओ सबका भक्ति दान से ।

ईश्वर वँदना ।

शरण में आये हैं हम तुम्हारी ।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥
संभालो बिगड़ी दशा हमारी ।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥
न हम में विद्या न हममें भक्ति ।
न हम में बल है न हम में शक्ति ॥
तुम्हारे दरके हैं हम भिखारी ।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक ।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी ॥

तुम्हारी महिमा है नाथ भारी।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥
सुना है हमने हैं हम तुम्हारे।
तुम्हीं हो सच्चे प्रभु हमारे ॥
तो सुध हमारी है क्यों विसारी।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥
प्रदान कर दो महान् शक्ति।
भरो हृदय में हमारे भक्ति ॥
तभी कहाओगे पाप हारी।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥
न होगी जब तक कृपा की वृष्टि।
न होगी तब तक दया की दृष्टि ॥
न तुम भी तब तक हो न्यायकारी।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥
हमें तो टेक बस नाम की है।
पुकार यह राधेश्याम की है ॥
तुम्हारी तुम जानो न्यायकारी।
दया करो हे दयालु भगवन् ॥

प्रभु प्रार्थना।

भगवन् हमारा जीवन संसार के लिये हो।
सत ज्ञान बुद्धि विद्या उपकार के लिये हो ॥ १ ॥

संसारहो की सेवा शुभ टेक हो हमारी।
सिर चाहें क्यों न मेरा संसार के लिये हो ॥ २॥
उत्तम स्वभाव मेरा दुश्मन का मन लुभाये।
वह देखते ही कह दें तुम प्यार के लिये हो॥ ३॥
उद्देश को अधूरा मर जायँ पर न छोड़ें।
पतवार बुद्धि कर में मँझधार के लिये हो॥ ४॥
ब्रह्मचर्य के प्रती हों सत् धर्म मती हों।
अरु लगन जो प्रिय हो प्रचार के लिये हो॥ ५॥
दुष्टों के मारने को सब शक्ति हो हमारी।
दृढ़ भक्ति देश जन के उद्धार के लिये हो॥ ६॥
वैदिक धरम में तत्पर आजन्म हम रहें पर।
मन में घृणा हमारे कुविचार के लिये हो॥ ७॥

ईश बन्दना।

करूँ बन्दना मैं तेरी जग के रचाने वाले।
ज्योति स्वरूप तुम हो तम के हटाने वाले॥१॥
पट घट के खोल दीजै हरि ज्ञान हमको दीजै।
करें ध्यान हम तुम्हारा, दुख से छुटाने वाले॥२॥
सृष्टि सुघर सजीली सिरजी है कैसी तुमने।
सारे पदार्थ जग में, मन को लुभाने वाले॥३॥
आकाश भूमि भूधर नक्षत्र शशि दिवाकर।
ये सब के सब हैं तेरी महिमा जताने वाले॥४॥

दुनियां के ताप दोषों से, मुक्त बस वही है।
पद कंज में जो तेरे, हैं लौ लगाने वाले ॥ ५ ॥
यद्यपि बहुत कठिन है, भव सिंधु पार जाना।
पर कुछ नहीं है चिन्ता, तुमही बचाने वाले ॥६॥
मैं हूँ शरण में तेरी, अब क्या है नाथ देरी।
मुक्ति करा दो मेरी, मारग दिखाने वाले ॥७॥

ईश वन्दना।

नर जन्म सफल करना चाहो, तो गावो गुण गिरधारी के
जिन भक्तों हित अवतार लिया यह गीतामें उपदेश दिया
सब धर्मोंके फलको तजके आता जो शरण मुरारी के॥१॥
वह जीवन मुक्त कहाता है दुख सुख समान बतलाता है।
रन रंग से पग पीछे न धरे, यह ढंग हों नर तन धारी के २॥
उपकारसार जिनजग जाना परमारथ पथ तिन पहिचाना
दीनों पे दया जो करता रहे, सो बस नहीं दुनियांदारीके३
निज देश दशा का ध्यान रहे भाषा औ भेषका ज्ञान रहे
अपमान मानका न मान रहे ऐसे गुन हों ब्रह्मचारी के४

मन्नुलाल गौस्वामी

ईश वंदना।

गावो गुन गिरधारी के।
अधम उधारन संकट टारन नटवर कुंजविहारी के।

दीनन पालक दुष्टन घालक, शोभा सिंधु खरारी के॥
भव भय भंजन जन मन रंजन, आनंद कंद मुरारी के।
पृथ्वी भार उतारन कारन, भगतनहित अवतारी के॥

जगदीश की आरती

जय जगदीश हरे प्रभो! जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट छिन में दूर करे ॥जय०॥
जो ध्यावें फल पावें दुःख मिटै मनका।
सुख सम्पत्ति घर आवै कष्ट मिटै तनका ॥जय०॥
माता पिता तुम मेरे स्वामी शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आश करूँ किसकी ॥जय०॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥जय०॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥जय०॥
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपती।
किस विध मिलूं दयानिधि तुमको मैं कुमती॥जय०॥
दीनबन्धु दुख हर्ता तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे॥ जय०॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥जय०॥

ब्रह्मचर्य पालन

प्रश्न-ब्रह्मचारी किसे कहते हैं ?

उत्तर-जो अपने वीर्य की रक्षा करता है।

प्रश्न-वीर्य की रक्षा से क्या होता है।

उत्तर-शरीर बलवान् होता है और बुद्धि बढ़ती है

प्रश्न-ब्रह्मचर्य कब तक पालन करे।

उत्तर—सारी उम्र तक।

प्रश्न—विवाह किस समय करे।

उत्तर—२५ वर्ष की उम्र में।

प्रश्न-इसके बाद वीर्य की रक्षा कैसे होसकती है

उत्तर-नियम पूर्वक रहने से।

प्रश्न-छोटी उम्र के विवाह से क्या नुक़सान होता है।

उत्तर-बल घट जाता है, दिमाग कमजोर हो जाता है और सन्तान भी कमजोर पैदा होती है। शरीर में रोग पैदा होजाता है।

प्रश्न-वीर्य रक्षा में बाधक कौन २ हैं।

उत्तर-व्यभिचारियों का संग मद्य मांस का सेवन वैश्या नृत्य और गन्दी पुस्तकों का पढ़ना।

प्रश्न-आश्रम कितने हैं।

उत्तर—चार, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास मनुष्य की आयु १०० वर्षकी मानी गई है किन्तु ब्रह्मचर्य के पालन से वह बढ़ भी सकती है।

प्रश्न—इन आश्रममों में कब तक रहे ?

उत्तर—२५ वर्षतक ब्रह्मचर्य में २५ वर्ष गृहस्थ में २५ वर्षवानप्रस्थमें इसके बाद् संन्यास आश्रममें रहे।

आरोग्यता के उपाय।

———:———

प्रश्न—तन्दुरुस्ती के रहने के नियम क्या हैं ?

उत्तर--(१) बासी भोजन न खाना, (२) कसरत करना, (३) किसी की जूठन न खाना, (४) स्वच्छ हवामें रहना (५) मीठा और ताजा पानी पीना (६) फलों का सेवन करना, क्रोध न करना (७) वस्त्र साफ़ पहिनना (८) माथे में चंदन लगाना (९) वीररसकी पुस्तकों को पढ़ना (१०) देवी देवताओं की कथा सुनना (११) वेदका स्वध्याय करना (१२) साफ जलसे स्नान करना [१३] मनको वश में रखना [१४] प्राणायाम करना [१५] और अपने विचारों को साफ़ रखना।

प्रश्न—भोजन कौनसा अच्छा होता है ?

उत्तर--आयु, प्राणशक्ति, बल, आरोग्य सुख व प्रीतिका बढ़ाने वाला सरस चिकना, ताकतवाला और चित्तको सुख देने वाला भोजन अच्छा होता है। जिससे दुःख शोक व रोग हो ऐसा कड़वा खट्टा, नोनखरा, बहुत गरम, चरपरा, रूखा व शरीर में ज्वलन पैदा करने वाला भोजन अच्छा नहीं होता। कच्चा, रसहीन, दुर्गन्धवाला, बासी और दूसरे का जूठा भोजन बहुत खराब होता है ऐसा भोजन तन्दुरुस्तीको बिगाड़ता है इसलिये विद्यार्थियों को चाहिये कि ऐसा भोजन वे कभी न करें।

प्रश्न—दूध कैसा पिया करें ?

उत्तर—दूध हमेशा गाय का पियो और उसे औटा कर भोजन करने के बाद रात्रि को अथवा प्रातः काल पीना चाहिये। दूध वाले जानवरों को साफ पानी पिलाओ और उनके थान साफ रक्खो।

धार्मिक आदर्श।

प्रश्न—धार्मिक आदर्श किसे कहते हैं ?

उत्तर—श्रुति स्मृतिमें जो मनुष्यों को पालन करने योग्य नियम बनाये हैं उन पर अपने संकल्प से न हटना यह धार्मिक आदर्श कहाता है।

जैसे वेदमें लिखा है सत्यंवद सच बोलो। धर्म च धर्म करो।

प्रश्न—उदाहरण (नजीर) देकर समझाइये ?

उत्तर—देखो, पुलिस मनुष्य पर अपना अधिकार तब जमाती है जब कि वह दूसरे की बहु बेटियों को बुरी निगाह से देखे अथवा किसी का माल छीन कर हजम करे। या किसी को घायल कर दे। नीति में लिखा है "मातृवत्परदारेषु" अर्थात् दूसरे की स्त्रियों को अपनी माता के समान समझो। जो मनुष्य ऐसा नहीं समझाता उसे पापी कहते हैं हिन्दुओं में यह नियम परम्परा से चला आता है देखो जिस समय प्रभु रामचंद्रजी राजा जनक की पुष्प वाटिका में घूम रहे थे वहां उन्होंने सीता को देखा फिर उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि भाई इस कन्या का विवाह हमारे साथ होगा। लक्ष्मण ने पूंछा यह आपने कैसे जाना ? उन्होंने कहा इस में मेरा मन साक्षी है गुसांईजी ने लिखा है।

रघुवशंशिन कर सहज सुभाऊ।
मन कुपंथ पग धरहि न काऊ॥
मोहि अतिशय प्रतीति जिये केरी।
जेहिं सपनेहु पर नारि हेरी॥

रघुके कुल (खान्दान) में उत्पन्न हुए पुरुषों

का सहज स्वभाव है कि उनका मन बुरे मार्ग की ओर कभी नहीं जाता। मुझे अपने मन पर विश्वास है कि मैंने स्वप्न में भी दूसरे की ओर नहीं देखा यह ही धार्मिक आदर्श है।

(दूसरा उदाहरण)

प्रश्न–क्या रामचन्द्र के सिवाय कोई और भी पुरुष हुआ है।

उत्तर–एक नहीं किन्तु ऐसे अनेक पुरुष हुए हैं ? तुम अपने इतिहासों को पढ़ा करो हजारों उपाख्यान ऐसे मिलेंगे।

प्रश्न—अच्छा कोई दूसरा उदाहरण दीजिये।

उत्तर—सुनो एक समय अर्जुन विद्या पढ़ने के लिये इन्द्र के यहां गया वहां इसके रूपको देखकर उर्वशी मोहित होगई। एक दिन रात्रि के समय अपने कमरे में बैठा हुआ पाठ याद कर रहा था उस समय वहां उर्वशी आई और कुंडी खटकाने लगी। अर्जुन ने उठकर किवाड़ खोले तो क्या देखा कि एक स्त्री शृङ्गार किये हुए खड़ी है। उस को देखकर यह बोला।

का त्वं शुभे कस्य परिग्रहोऽसि,
किं वा मदभ्यागम कारणं ते।

आचक्ष्व मत्वा वशिनां कुरूणां ।
मनः परस्त्री विमुख प्रवृत्तिः ॥

हे शुभे ! तुम कौन हो ? किसकी स्त्री हो यहाँ क्यों आई हो ?

उर्वशी—अर्जुन ! मैं जिस लिये यहां आई हूं क्या तुम इस बात को नहीं समझे ?

अर्जुन—हे माता ! मैं जिस कुल में पैदा हुआ हूँ वहां के पुरुषों की मर्यादा है कि वह पराई स्त्री को कभी बुरी दृष्टि से नहीं देखते ।

उर्वशी—अर्जुन ! तू बेवकूफ है देख मो जैसी सुंदर स्त्री तुझे विश्वभर में नहीं मिल सकती ।

अर्जुन—उर्वशी ! मैंने यह सुना है कि मेरी माता कुन्ती अत्यन्त रूपवती है यदि तू मेरी माता से भी अधिक रूपवती है तो मैं परमात्मा से यही प्रार्थना करूँगा आगे को मेरा जन्म तेरे उदर से हो। किन्तु इस समय जिस आशा को लेकर तुम यहां आई हो उसे मैं पूर्ण नहीं कर सकता ।

हम क्षत्री कुल पूत इन्द्र के अंतेवासी ।
कुल कलंक जिन देय मात हम भारतवासी ॥

इतना सुनते ही उर्वशी वहां से चली गई इसको कहते हैं धर्म मर्यादा ।

कवित्त ।

होते जो रामचन्द्र राघव आज भारत में ।
दुष्ट दुराचारी कहूँ देखहु न परते ॥
होते जो धर्मी युधिष्ठिर से सत्यवादी ।
लंपट लबारन को कारो मुंह करते ॥
होते जो लक्ष्मण और भरतजी से भैया बन्धु ।
वैर के करैया तो तलैया डूब मरते ॥
आरत है भारत पुकारत है बार बार ।
धर्मवीर होते तो हमारी पीर हरते ॥

सत्य बोलना ।

प्रश्न--सत्य बोलना किसे कहते हैं ?

उत्तर--जैसी देखी सुनी हृदय हो, वैसी उसको कह देना
जैसी मुँह से वाणी बोलो, पूरण उसको कर लेना ॥
मुँह शोभित करने को सच्चा भूषण यही कहाता ।
इसके बिना जगत् में कोई, ऊँचा पद नहीं पाता है ॥

अर्थात् जैसा आंख से देखा हो, कान से सुना हो या जैसा मन में हो उसको वैसा ही कह देना सत्य कहलाता है ।

प्रश्न--सत्य से क्या लाभ है ?

उत्तर—सत्य बोलने वाले का सब लोग विश्वास करते हैं और उसकी वाणी में ऐसी शक्ति उत्पन्न होजाती है कि जैसा वह उच्चारण करें वैसा ही हो जाता है। अहा! जब तुम राजा हरिश्चन्द्रका वृत्तान्त सुनोगे तो समझ जाओगे कि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

प्रश्न--राजा हरिश्चन्द्र का कुछ वृत्तान्त सुनाइये

उत्तर--सुनिये राजा हरिश्चन्द्र सूर्यवंशी क्षत्रिय थे यह अयोध्या में राज करते थे। एक दिन राजा शिकार खेलते हुए दूर बनमें जा पहुँचे वहीं उन्होंने देखा कि कुछ स्त्रियें पेड़ से बंधी हुई रो रही हैं राजा को उन पर दया आई और तत्काल उन्हें खोल कर अपनी राजधानी को लौट आये। यह विश्वामित्रजी का आश्रम था जब ऋषि लौटकर आये तब उन्होंने वहां स्त्रियों को न देखा, ऋषि अपने योग बल से इसका भेद जान गये और उसी समय राजा हरिश्चन्द्र के पास पहुंचे वहाँ जाकर उन्होंने राजा को बहुत फटकारा। राजाने हाथ जोड़कर कहा हे ऋषि राज! आप मुझे क्षमा करें और इस अपराध के बदले में जो आप मुझे आज्ञा करेंगे मैं उसका पालन करूँगा। बिश्वामित्र जी बोले कि तू अपना सारा

राज्य दान करदे--राजा ने ऐसा ही किया। फिर विश्वामित्र बोले कि इतने बड़े दानकी दक्षिणा में ७ करोड़ मोहरें और दीजिये। यह सुनकर राजा घबड़ाया और एक महीने का वायदा करके तत्काल काशीको चलागया लेकिन वहां भी मोहरोंका प्रबंध उस से न हो सका और वायदे का दिन धीरे धीरे समीप आने लगा। राजा अपनी स्त्री शैव्या और पुत्र रोहिताश्वको लेकर गलियोंमें कहने लगे कि भाइयों! यदि किसी को दास--दासी चाहियें तो हमें मोल लेलो। राजा को इस भांति काशी में घूमते हुए कई दिन बीत गये और किसी ने भी उनकी ओर ध्यान न दिया। छठे दिन तीन करोड़ देकर एक ब्राह्मण ने शैव्याको खरीद लिया। यह देख रोहिताश्व ने अपनी माता का पल्ला पकड़ लिया और रो कर कहने लगा कि अम्मा मैं तो तुझे नहीं छोड़ूँगा। शैव्या बालक की तोतली वाणी को सुनकर रोने लगी और बोली कि महाराज यदि आप आधी रोटी मुझे और देदिया करें तो मैं अपने बालक को भी साथ ले चलूँ।

ब्राह्मण ने इस बात को मान लिया और दोनों को साथ लेकर अपने घर को चला गया। तीन दिन के बाद राजा हरिश्चन्द्र को चार करोड़ मोहरें देकर एक चाण्डाल (भंगी) ने खरीद लिया और

श्मशान में कफ़न काठी बटोरने तथा महसूल लेने का काम उनके सुपुर्द कर दिया। इस भांत चाण्डाल के यहां काम करते हुए राजा को कितने ही महीने बीत गये।

एक दिन बाग में फूल चुनते हुए रोहिताश्व को सर्प ने काट लिया और यह तत्काल मर गया रानी अपने पुत्र केशव को लेकर आधी रात्रि के समय श्मशान भूमि में आई और वहां उसकी चिताको बनाकर वह फूटरकर रोने लगी इतने ही में हरिश्चन्द्र ने आकर कर मांगा। जब उन्होंने देखा कि यह ही प्राण प्यारा है तो उनका धैर्य भी टूट गया और वह भी पुत्र शोक की धारा में बह गये और फूट २ कर रोने लगे। कुछ काल के अनन्तर उन्होंने रानी से कहा कि शैव्या! मेरे स्वामी का कर देकर इसकी दाह क्रिया करो?

शैव्या—महाराज! मेरे पास एकधोती के सिवाय और कुछ भी नहीं है क्या आप मुझ से भी कर लेंगे?

हरिश्चन्द्र--शैव्या! अपने स्वामी की आज्ञा भंग नहीं कर सकता जो कुछ तुम्हारे पास है उस म से कुछ हिस्सा फाड़ कर देदो।

इतना सुनते ही रानी ने अपने शिरका पल्ला उतार कर ज्योंही फाड़नेके लिये हाथ चलाया उसी समय भगवान् प्रगट हुए और आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी और चारों ओर से राजन् धन्य हो !!! ऐसे शब्द सुनाई आने लगे।

रोहिताश्व भी हाथ जोड़कर खड़ा होगया विश्वामित्रने उनको राज लौटा दिया और कहने लगे कि राजन् यह तुम्हारी परीक्षा थी।

भगवान्--उसी समय अन्तर्ध्यान होगये। और राजा हरिश्चन्द्र अयोध्या को लौट आये। सत्य की सदा जय होती है।

गुरु सेवा।

प्रश्न–गुरु किसे कहते हैं?

उत्तर--जो अज्ञान को दूर कर ज्ञानका प्रकाश करें उसे गुरु कहते हैं। माता पिता का प्रेम बालक पर कुछ स्वार्थ को लिये होता है किन्तु गुरुका प्रेम शिष्य पर निःस्वार्थ होता है इस लिये गुरु का सेवा भक्ति पूर्वक बालकों को करनी चाहिये। शास्त्र

में लिखा है गुरु द्रोही के समान संसार में कोई पापी नहीं है। जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य उच्च पदवी को प्राप्त होता है, धन पैदा करके सुख भोगता है, यश फैलाता है यदि इतने पर भी उनकी सेवा न करे तो उस से अधिक पापी संसार में कौन होगा।

राजा दिलीप, रामचन्द्र, जनक आदि राजाओं की कीर्त्ति गुरुकी कृपा से संसार में छारही है।

प्रश्न—गुरुके सामने कैसे रहना चाहिये?

उत्तर-[१] गुरुके सामने बड़ी नम्रता से रहना चाहिये उनका अदब हमेशा करना चाहिये जिस समय गुरुजी मिलें उसी समय हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम करो, जिस काम को वे कहें उसे मन लगा कर करो।

[२] गुरुके सामने नीचे आसन पर बैठा करो उन के सामने अकड़ना ठीक नहीं है।

[३] दुःख पाने पर भी गुरुका अनादर मत करो

[४] जैसे गहरा खोदने वाले को पानी मिल जाता है तैसे ही गुरुकी सेवा करने से सब विद्या आजाती है।

[५] गुरुके प्रसन्न रखने से कल्याण होता है।

———

माता पिताकी सेवा ।

---:---

बालकों ! तुम्हारे सुख के लिये जितने दुःख माता पिताने उठाये हैं यदि उन्हें लिखने लगो तो बड़ी पुस्तक बन जायगी। यदि तुम जीवन भर उनकी सेवा करते रहो तो भी उनके ऋणसे नहीं छूट सकते ।

माता को देखो उसने तुम्हें नौ महीने पेट में रक्खा किस लाड़ प्यार से तुम्हें पाला, माता, गीले में आप सोई सूखे में तुम्हें सुलाया। पिताको देखो उसने तुम्हारे सुख के लिये कष्ट उठाये किन्तु तुम्हें तनिक भी कष्ट न होने दिया इसलिये तुम्हें उनकी सेवा सदा करनी चाहिये।

शास्त्रों में लिखा है "मातृ देवोभव" पितृ देवो भव, माता को देवता के समान् समझो और पिता को ईश्वर के समान समझो । अर्थात् जिस भांति तुम ईश्वर की उपासना किया करते हो इसी प्रकार अपने माता पिता का सत्कार किया करो ।

अभियादन शीलस्य नित्यं बृद्धियसेविन ।
चत्वारि तस्यवर्धन्ते आयुर्विद्य मशोबलम् ॥

अर्थात् जो बालक प्रातःकाल के समय अपने माता

पिताको प्रणाम व उनकी सेवा किया करते हैं उनकी उम्र विद्या यश और बल बढ़ता है। इसलिये बालकों को चाहिये कि प्रातः कालको सब से पहिले अपने माता पिता के चरणों में शिर नवाकर उन्हें प्रणाम किया करें। और उनकी आज्ञा को सदा मानें।

हमारी चोटी।

---:o:---

प्रश्न- चोटी रखने से क्या लाभ है ?

उत्तर-(१) शरीर के भीतर १०७ मर्म स्थान हैं इनका सम्बन्ध और सब नसोंका मेल मस्तक के पिछले ऊपर के हिस्से में हुआ है जहां पर चोटी रक्खी जाती है। यह शरीर में सब से मुख्य है, यदि कोई अंग गल जाय तो अच्छा होसकता है, हड्डी टूट जाय तो जुड़ सकती है किन्तु चोटी का स्थान फट जाय तो मनुष्य जीवित नहीं रह सकता इस लिये उस स्थानकी रक्षा के लिये वहाँ बाल अधिक रक्खे जाते हैं।

(२) यह विज्ञान से सिद्ध होचुका है कि बाल पर

बिजली का असर नहीं होता इससे शिर मुख्य स्थान की रक्षा के लिये चोटी रखाई जाती है जिससे बिजली भी उसे हानि न पहुँचा सके मर्म स्थानों की रक्षा के आधीन ही प्राणों की रक्षा है इस लिये चोटी रखाना हिन्दु जाति के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

(३) जब हम किसी बात को भूल जाते हैं तो वस्त्र में गांठ लगा लिया करते हैं जिससे वह बात गांठ को देख कर याद आजाती है। शास्त्रों में लिखा है बिना चोटी के मनुष्य वैदिक कर्मकाण्ड का अधिकारी नहीं होता सन्ध्या करते समय चोटी में गांठ बांध देते हैं, स्नान करते समय जब चोटी पर हाथ जाता है तो सन्ध्या का ध्यान तुरन्त ही आजता है—

गायत्र्या तु शिखां बद्ध्वा नैऋत्यां ब्रह्मरन्ध्रतः।
जूटिकाश्च ततो बद्ध्य ततः कर्म समचरेत्॥

अर्थात्-चोटी को बांधकर वैदिक कर्म करने चाहियें

पंचयज्ञ ।

——:o:——

मनुष्यों से स्थानों में अचानक जीव हत्या होजाती है १ चूल्हा साफ़ करते समय २ आटा पीसते समय ३ बुहारी देते समय ४ अन्न कूटते समय ५ जल भरते समय इन पापों की शान्ति के लिये पंचयज्ञ किया जाता है ।

प्रश्न—पंचयज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर—१ ब्रह्मयज्ञ, २ देवयज्ञ ३ पितृयज्ञ ४ भूत यज्ञ ५ और नृयज्ञ ये पांचयज्ञ कहलाते हैं ।

प्रश्न–ब्रह्मयज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर–वेद का पढ़ना ब्रह्मयज्ञ कहाता है ।

प्रश्न--देवयज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर---देवताओं को प्रसन्न करने के लिये जो आहुतियें अग्नि में दीजाती हैं उसे देवयज्ञ कहते हैं ?

प्रश्न–पितृयज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर–मरे हुए पितरों के उद्देश्य से जो तर्पण व श्राद्ध किया जाता है उसे पितृयज्ञ कहते हैं ?

प्रश्न–भूतयज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर--संसार की तृप्ति के उद्देश्य से देवताओं को जो अन्नकी बलि दीजाती है उसे भूतयज्ञ कहते हैं ?

प्रश्न--नृयज्ञ किसे कहते है ?

उत्तर--अचानक आये हुए ब्राह्मणकी सेवा नृयज्ञ कहाता है।

त्रिकाल संध्या।

प्रश्न--संध्या किसे कहते हैं ?

उत्तर--परमात्माका ध्यान अच्छी प्रकार से करना इसको संध्या कहते हैं ?

प्रश्न--संध्या किस समय करनी चाहिये ?

उत्तर--प्रातःकाल दोपहर और सायंकाल के समय करनी चाहिये।

प्रश्न--यदि संध्या न करे तो क्या हानि है ?

उत्तर--संध्या न करने से पाप होता है और मनुष्य धर्म से पतित होजाता है।

प्रश्न--संध्या की विधि क्या है ?

उत्तर--संध्याकी विधि बहुत बड़ी है किन्तु जिन बालकों का जनेऊ होगया हो उन्हीं को इतना काम

करना चाहिये। संध्या प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहिन बायें कन्धे पर अंगोछा रख माथे में चन्दन लगाकर नीचे लिखे मंत्र को पढ़ पूर्व मुख करके अपने ऊपर जल छिड़के।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

इसके बाद संकल्प करें—

ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोन्हि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्तैक देशान्तर्गते कलयुगे कलिप्रथम चरणे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकनामाहं प्रातः सन्ध्योपासनकर्म करिष्ये।

इस के बाद नीचे लिखे मंत्र से चोटी में गांठ लगावे।

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

इसके बाद नीचे लिखे मंत्र से आचमन करे।

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः।

इसके बाद नीचे लिखे मंत्रों से अपने अंगों को स्पर्श करे—

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुः चक्षुः। ओं श्रोत्रम्। ओं नाभिः ओं। हृदयम्। ओं कण्ठः। ओं शिरः ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। करतलकर पृष्ठे।

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्रों से अपने अंगों पर जल छिड़के।

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम् ओं तपः पुनातु पादयोः। ओं सत्यं पुनातु शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

इसके बाद नीचे मंत्र से आचमन करे।

ओं ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीं चान्तरिक्ष मथो स्वः।

इसके बाद हाथ में जल लेकर गायत्री मंत्र को पढ़कर अपने चारों ओर घुमा कर फेंक दे।

फिर जल हाथ में लेकर विनियोग पढ़कर छोड़े।

ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्रीछन्दऽग्निर्देवता शुक्लोवर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः॥ १॥ सप्तव्याहृतीनां प्रजापति ऋषि र्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि अग्नि वाय्वादित्य बृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः॥ २॥ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषि गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः॥ ३॥ शिरसः प्रजापतिः ऋषि स्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निर्वायुः सूर्यो देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः॥ ४॥

प्राणायाम विधिः ।

प्राणायाम करते समय नासिका के बायें छिद्र को अनामिका और मध्यमा दोनों अंगुलियों से बंद कर चतुर्भुज विष्णु भगवान् को नाभिकमल में ध्यान करता हुआ तीन बार नीचे लिखे मंत्र को पढ़ और श्वास को दाहिने छिद्र खींचता जावे पुनः दोनों का बंदकर अपने हृदय में ब्रह्माजी का ध्यान करे फिर बायें छिद्र से मंत्र पढ़ता हुआ धीरे २ श्वांस छोड़ कर फिर दाहिने स्वर से श्वास को खींचे और अपने मस्तक में भगवान् शंकर का ध्यान करे ।

ओं भूः भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ओं तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । ओं आपो ज्योतिरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः सुस्वरो

जल लेकर विनियोग छोड़े—

ओं सूर्यश्चमेति ब्रह्मऋषिः प्रकृति श्छन्दः सूर्योदेवता आप मुपस्पर्शने विनियोगः ।

फिर नीचे लिखे मंत्र से आचमन करे—

ओं सूर्यश्चमा मन्युश्च मन्युपतश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रिमन्तद्यद्रात्र्यां पापमकार्ष मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्या

मुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यद् किञ्चि दुरितं मयि इदनहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

मध्यान्ह (दोपहर) को नीचे लिखे मंत्र से जल छोड़े।

ओं आपः पुनन्त्विति विष्णु ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

फिर आचमन करे–

ओं आपः पुनन्तु पृथिवी पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तुमामापोऽसतां च प्रतिग्रह स्वाहा।

सायंकाल के आचमन का विनियोग–

ओं अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

सायंकाल के आचमन का मंत्र—

ओं अग्निश्चमा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्तां यदन्हापापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चि दुरितमयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

फिर विनियोग छोड़े—

ओं आपो हिष्ठेत्यादि तृचस्य सिंधुद्वीप ऋषि गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जन विनियोगः।

नीचे लिखे मंत्रों से शिरपर मार्जन करे—

ओं आपो हिष्ठामयो भुवः तानऊर्जेदधातन।

॥ २ ॥ ओं महदेवाय चक्षुसे ॥ ३ ॥ ओं यो वः शिवतमोरसः ॥ ४ ॥ ओं तस्य भोजयतेहनः ॥ ५ ॥ ओं उशतीरिवमातरः ॥ ६ ॥ ओं तस्मा अरङ्गमामव ॥ ७ ॥ ओं यस्य चद्वयथा जिन्वथ ॥ ८ ॥ ओं आपोजन यथा च नः ॥ ९ ॥

फिर विनियोग छोड़े—

ओं द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः।

फिर मंत्र पढ़कर अपने शिर पर फिर जल छिड़के।

ओं द्रुपदादिममुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूत पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मेनसः।

पुनः विनियोग छोड़े—

ओं अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः।

जल हाथ में लेकर नासिका के आगे तीन बार लगा कर अपने बायीं ओर फेंकदे।

ओं ऋतञ्च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्य-जायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रादर्णवा दधिसम्वत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथवीं चान्तरिक्ष मथोस्वः।

विनियोग—

ओं अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छंदः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

फिर आचमन करे—

ओं अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

फिर फूल और चन्दन लेकर तीन बार गायत्री को पढ़ सूर्य को अर्घ दे। और एक पैर से खड़ा हो अञ्जलि बांधकर सूर्योपस्थानका मंत्र पढ़े पहिले विनियोग छोड़े—

ओं उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥ १॥

फिर ये मंत्र बोले—

ओं उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योति रुत्तमम्॥ १॥

ओं उदुत्यमिति मंत्रस्य प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छंदः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

विनियोग और मंत्र—

ओं उदुत्यंजातवेदसं देवं वहन्तिकेतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ २॥

ओं चित्रमित्यस्यकौत्स ऋषि स्त्रिष्टुप्छंदः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

विनियोग और मंत्र—

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ ३॥

विनियोग और मंत्र—

ओं तच्चक्षुरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिः उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ।

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शत-मदीनाः स्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ ४ ॥

फिर आसन पर बैठकर अंगन्यास करे ।

ओं हृदयायनमः । ओं भूः शिरसे स्वाहा । ओं भुवः शिखायै वषट् । ओं स्वः कवचाय हुँ । ओं भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् ।

अब यहाँ पर गायत्री के ऋषि आदि से युक्त नीचे लिखे हुए तीनों मन्त्रों का पाठ करे । ओंकारस्य ब्रह्माऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्नि देवता शुक्लोवर्णः जपे विनियोगः ॥१॥ ओं महाव्याहृतीनां प्रजापति ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांस्यग्नि वायवादित्या देवताः गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः गायत्रीछन्दः सविता देवता सर्व पाप क्षये विनियोगः ॥ २ ॥

फिर गायत्री का ध्यान करे ।

ओं श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेय वसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पै रलंकारैश्च भूषिता ॥ १ ॥
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोक गताऽथवा ।
अक्ष सूत्रधारा देवी पद्मासनागता शुभा ॥ २ ॥

विनियोग—

ओं तेजोसीति देवाऋषयः शुक्रं देवतं गायत्री छन्दो गायत्र्या ऽवाहने विनियोगः ।

फिर गायत्री का आवहन करे—

ओं तेजोसीति शुक्रमस्यमृतमसि धामनामीसि प्रियंदेवाना मनाधृष्टं देवयजनमसि ।

फिर उपस्थान करे ।

ओं गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोमा प्रापत्।

इसके बाद १०८ वार गायत्री मंत्र का जप करे।

गायत्री मंत्रः

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अग्नि होत्र।

——;o:——

आम वा ढाककी समिधाओं को यज्ञकुंड में रख तिल जौ चावलों में घृत बूरा और सुगन्धित औषधियों को मिलाकर उस से होम करे पहिले स्रुवेसे घृतकी आहुतियें दे—

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। अग्नये स्वाहा इदमाग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। ओं भूः स्वाहा इदमग्नये०। ओं भुवः स्वः इदं वायवे० ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०।

नीचे लिखे मन्त्रों से शाकल्य की आहुति दे।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांऽसि प्रमुमग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्यां०।

ओ३म् स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवेतिनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्ठौ। अव यक्ष्वनो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवोन एधि स्वाहा इदमग्नि वरुणाभ्यां०

ओ३म् अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वम याअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये०।

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितताः महान्तः तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च ओ३म् अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरुस्वाहा। ओ३म् यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवः असि स्वाहा। ओ३म् एव मा सुश्रवः सौश्रवसं कुरु स्वाहा। ओ३म् यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि स्वाहा। ओ३म् एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधियो भूयासं स्वाहा।

फिर जल हाथ में लेकर अग्नि के चारों ओर छोड़े और हाथों को तपाकर नीचे लिखे मन्त्रोंसे अपने मुख को स्पर्श करे।

ओ३म् तनूपा आग्नेसि तन्वं मे पाहि। ओ३म् आयुर्दा मे अग्नेस्यायुर्मे देहि।

ओ३म् वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि। ओ३म् अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण। ओ३म् मेधां देवः सविता आदधातु। ओ३म् मेधां मे देवी सरस्वती

आदधातु । ओ३म् मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ।

नीचे लिखे मन्त्रोंसे सब अंगोंसे हाथोंको तपाकर स्पर्श करे

ओ३म् अंगानि च मा आप्यायताम् । वाङ् च मा आप्यायताम् । ओ३म् प्राणश्च मा आप्यायताम् । ओ३म् चक्षुश्च माप्यायताम् । ओ३म् श्रोत्रञ्चमा आप्यायताम् । ओ३म् यशो बलञ्च मा आप्यायताम् ।

फिर फल फूल चंदन और घृतसे स्रुव को भर कर नीचे लिखे मन्त्रसे पूर्ण आहुति दे ।

ओ३म् मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतआ-जातमग्निम् कविं ९ सम्राजमतिथिं जनानामासन्न पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इदमग्नये० ।

स्रुवे से यज्ञीय भस्म को लेकर "ओ३म् त्र्यायुषं जमदग्नेः" इससे माथे में "ओ३म् कश्यपाय त्र्यायुषं' इससे गले में "ओ३म् यद्देवेषु त्र्यायुषं,, इससे दाहिनी भुजामें और "ओ३म् तन्नो अस्तु त्र्यायुषं,, इससे हृदय में धारण करे ।

फिर प्रार्थना करके अग्निहोत्र समाप्त करे ।

प्रार्थना ।

सर्वे कुशलिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुखमाप्नुयात् ॥

इति शम् ।



